ब्रजभाषा और प्राकृत का सम्बन्ध

डॉ. दर्शना जैन, जयपुर

सदैव से भावों की अभिव्यक्ति के लिये भाषा का प्रयोग होता रहा है, चाहे वह सांकेतिक भाषा का रूप हो अथवा वाचनिक भाषा का रूप हो। जब यह वाचनिक भाषा की एक रूपता जनसमूह को अपनी ओर आकर्षित करने लगती है, तो वह जनभाषा कहलाने लगती है। महापुरुषों ने अपने वक्तव्यों को जनसमूह तक पहुँचाने के लिये इसी जनभाषा को साधन बनाया।

प्राकृत भाषा क्या है? – प्राचीन समय में केवल एक ही भाषा का प्रयोग होता था, जिसे जनबोली या जनभाषा के नाम से जानते थे। इसी जनभाषा का साहित्यिक रूप वेद है, जिसकी भाषा को आधुनिक साहित्यकार छान्दस भाषा कहते हैं।[1] इस छान्दस भाषा का अपना व्याकरण ग्रन्थ नहीं था। इस कारण जैसे–जैसे परिवेष बदला लोगों में भाषा का विकास हुआ, वैसे–वैसे वह प्राचीन छान्दस भाषा कठिन प्रतीत होने लगी। वहीं दूसरी ओर सभ्य समझे जाने वाले उच्चवर्ग के लोग सामान्य लोगों की भाषा से स्वयं को पृथक् करने लगे और उच्चवर्ग की भाषा का प्रयोग करने लगे। इन्हीं प्रयासों ने छान्दस भाषा को संस्कारित किया। उसके नियमों का सृजन हुआ, जिसे संस्कृत भाषा कहा जाने लगा तथा वेदों की छान्दस भाषा को वैदिक संस्कृत नाम दिया। जो भाषा जनसमूह में व्याप्त थी, निम्नवर्ग की भाषा थी, विभिन्न प्रान्तों में फैली हुई थी, उन्हें उन–उन प्रान्तों की भाषा के नाम से जाना गया। जैसे– शूरसेन प्रान्त की शौरसेनी, महाराष्ट्र की महाराष्ट्री, मगध की मागधी, शूरसेन तथा मगध के सीमावर्ती प्रान्तों की अर्धमागधी आदि भाषाओं को नाम दिया। ये भाषाएँ जनबोली का स्वरूप है, जिसे संस्कृत साहित्यकारों ने संस्कृत निष्ठ प्राकृत नामकरण किया। इसी प्राकृत जनभाषा का परिनिष्ठित रूप छान्दस भाषा है। इस कारण प्राकृत भाषा के बहुत से नियम छान्दस भाषा में पाये जाते हैं। भरत मुनि ने नाट्य शास्त्र में प्राकृत भाषा को बोलने वालों लोगों को अधिकृत किया।[2]

प्राकृत भाषा को सामान्य रूप से स्वभाविक भाषा कहा जाता है। प्राकृत का शाब्दिक अर्थ देखें तो ज्ञात होगा कि प्रारम्भ में की गई भाषा को प्राकृत भाषा कहते हैं। प्रकृति से प्रदत्त संस्कार विहीन स्वभाविक भाषा को प्राकृत भाषा कहते हैं। इस भाषा को सभी आयु वर्ग के लोग बिना किसी व्याकरण की सहायता से बोल सकते थे। दशरूपक के टीकाकार धनिक ने प्राकृत भाषा की निष्पत्ति के विषय में कहा है– **प्रकृतेः आगतं प्राकृतम्** अर्थात् प्रकृति से आयी हुयी प्राकृत है।[3] इसी प्रकार आठवीं शताब्दी के विद्वान् वाक्पतिराज ने अपने गउडवहो नामक

---

1 प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, भाषा विकास और प्राकृत, पृष्ठ– 2–3।

2 नाट्यशास्त्र, भरतमुनि, अध्याय– 17, श्लोक– 40–58, पृष्ठ– 410–413।

3 दशरूपक– टीकाकार– धनिक, परिच्छेद–2, श्लोक–60 की व्याख्या

महाकाव्य में प्राकृत भाषा को जनभाषा माना है और इस जनभाषा से ही समस्त भाषाओं का विकास स्वीकार किया है। कहा है–

सयलाओ इमं वाया विसंति एत्तो य णेंति वायाओ।

एंति समुद्दं चिय णेंति सायराओ च्चिय जलाइं।।[4]

जिसप्रकार जल समुद्र में प्रवेश करता है और समुद्र से ही वाष्प रूप से बाहर निकलता है, इसी तरह प्राकृत भाषा में सब भाषाएँ प्रवेश करती है और इस प्राकृत भाषा से ही सब भाषाएँ निकलती है।

रुद्रट कवि के काव्यालंकार के अध्याय–2, की श्लोक 12 की व्याख्या करते हुये 11वीं शताब्दी के विद्वान् नमिसाधु कहते हैं कि– **प्राकृतसंस्कृतमागधपिशाचभाषाश्च शौरसेनी च। षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंशः।। प्राकृतेति सकलजगज्जन्तूनां व्याकरणादिभिरनाहित–संस्कारः सहजो वचनव्यापारः प्रकृतिः, तत्र भवं सैव वा प्राकृतम्।**[5] प्रकृत शब्द का अर्थ है, लोगों का व्याकरण आदि के संस्कारों से रहित स्वाभाविक वचन व्यापार, उससे उत्पन्न अथवा वहीं प्राकृत है।

प्राकृत भाषा का विकास– भारतीय इतिहास की दृष्टि से भाषाओं के विकास की ओर दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि भारत में बोली जाने वाली समस्त भाषाएँ मध्य भारतीय आर्यभाषा से निःसृत हैं।

भाषा परिवार के अनुसार विश्व में 12 प्रकार के भाषा परिवार हैं, जो निम्न हैं–1. भारोपीय परिवार 2. सेमेटिक परिवार 3. हैमेटिक परिवार 4. चीनी परिवार या एकाक्षरी परिवार 5.यूराल अल्टाई परिवार 6. द्राविड परिवार 7. मैलोपालीनेशियन परिवार 8. बंटू परिवार 9. मध्य अफ्रीका परिवार 10. आस्ट्रेलिया प्रशान्तीय परिवार 11. अमेरिका परिवार 12. अन्य परिवार।

इन बारह भाषा परिवारों में से प्राकृत भाषा आदि समस्त भारतीय भाषाओं (द्राविड भाषाओं के अतिरिक्त) का सम्बन्ध प्रथम भारोपीय भाषा परिवार से है, यह भारोपीय भाषा परिवार भी आठ भागों में विभक्त है। 1. आरमेनियन 2. बाल्टैस्लैबोनिक 3. अलवेनियम 4. ग्रीक 5. भारत, ईरानी या आर्य परिवार 6. इटैलिक 7. कैल्टिक 8. जर्मन या ट्यूटानिक। इन आठ भारोपीय भाषा उपपरिवार में भी प्राकृत भाषादि भारतीय भाषाएँ भारत ईरानी या आर्य भाषा परिवार से संबंधित हैं। भारत ईरानी आर्य भाषाएँ तीन भाग में विभक्त हैं 1. ईरानी शाखा परिवार 2. दरद शाखा परिवार 3. भारतीय आर्य शाखा परिवार।[6]

---

4 गउडवहो– वाक्पतिराज, कविप्रशंसा– गाथा– 93।

5 काव्यालंकार– रुद्रट, अध्याय–2, श्लोक–12 की व्याख्या।

6 प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, भाषा विकास और प्राकृत, पृष्ठ– 2।

इस भाषा परिवार में भारतीय आर्य शाखा परिवार से प्राकृत भाषा का घनिष्ठ संबंध है। अतः भारतीय आर्यभाषा का ही एक रूप प्राकृत भाषा है।

प्राकृत से निःसृत अपभ्रंश भाषा – प्राचीन काल से आर्यावर्त में दो भाषा परिवारों का वर्चस्व रहा है। आर्य भारतीय भाषा परिवार तथा द्रविड भारतीय भाषा परिवार।

आर्य भारतीय भाषा परिवार से देश की लगभग सभी भाषाओं की उत्पत्ति हुई। वहीं द्रविड भाषा परिवार से दक्षिण भारत में प्रचलित तमिल, तेलुगू, कन्नड, मलयालम, तुलु भाषा की उत्पत्ति हुई है। वर्तमान में भारत में 28 राज्य एवं 9 केन्द्रशासित प्रदेश हैं। जिनमें दोनों भाषा परिवारों की उपभाषा का प्रचलन है। पूर्व में कही गई प्राकृत भाषा की शाखा परिवार की भाषाओं का भ्रष्ट होना प्रारम्भ हुआ।

समाज में जहाँ–जहाँ प्राकृत भाषा का व्यवहार होता था, वहाँ–वहाँ प्राकृत भाषा के भ्रष्ट रूप का भी प्रचलन था। जब जनबोलियों के समूह को प्राकृत भाषा नामकरण किया गया, तभी से उसे प्राकृत भाषा कहा जाने लगा। प्राकृत भाषा को भी साहित्यिक रूप प्रदान करने के लिये संस्कृत व्याकरण के समान प्राकृत व्याकरण का भी सृजन हुआ। चूँकि उच्च वर्ग के लोगों को प्राकृत भाषा का अध्ययन करना था। इस कारण प्राकृत भाषा का व्याकरण उच्चवर्ग की भाषा संस्कृत में किया गया। सामान्यवर्ग बिना व्याकरण के ही भाषा का व्यवहार करता रहा। इस कारण समाज में जिस प्रकार से जनभाषा को संस्कारित कर संस्कृत भाषा का विकास हुआ था और प्राकृत भाषा लोगों की स्वतंत्र भाषा के रूप में उभरी थी। उसी प्रकार जब प्राकृत को व्याकरण के नियमों से बांधकर संस्कारित किया और साहित्यिक रूप दिया, तभी से लोगों की व्याकरण से रहित प्राकृत भाषा पृथक् हो गई। समाज में प्राकृत भाषा दो प्रकार से प्रयोग में आने लगी। पहली संस्कारित प्राकृत भाषा दूसरी भ्रष्ट प्राकृत भाषा। समाज में दो भिन्न–भिन्न भाषाओं का एक नामकरण विवाद का कारण हो सकता था, इस कारण भ्रष्ट प्राकृत भाषा को अपभ्रंश नाम दिया गया। इस अपभ्रंश का प्रयोग जब से जनबोली में असंस्कारित रूप में था, तभी से होता आ रहा है। यह अपभ्रंश उतने ही प्रकार की है, जितने प्रकार की प्राकृत है। मागधी प्राकृत का भ्रष्ट रूप मागधी अपभ्रंश (मगही) बनी। महाराष्ट्री प्राकृत का भ्रष्ट रूप महाराष्ट्री अपभ्रंश (मराठी) बनी। अर्धमागधी प्राकृत का भ्रष्ट रूप अर्धमागधी अपभ्रंश (अवधी) बनी। शौरसेनी प्राकृत का भ्रष्ट रूप शौरसेनी अपभ्रंश (ब्रज आदि) बनी। पैशाची प्राकृत का भ्रष्ट रूप पैशाची अपभ्रंश (पंजाबी आदि उत्तरी भाषाएँ) बनी। ब्राचड प्राकृत का भ्रष्ट रूप ब्राचड अपभ्रंश (सिंधी) भाषा बनी। इसके अतिरिक्त बहुत सी प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थी, जिनका भ्रष्ट रूप उतने प्रकार की अपभ्रंश भाषा के रूप में प्रकट हुई। इसप्रकार से प्राकृत भाषाओं से अपभ्रंश भाषा की उत्पत्ति हुई।

काल व्यतीत होने पर अपभ्रंश भाषा भी साहित्यिक रूप में पहुँची। फलस्वरूप अपभ्रंश भाषा को भी व्याकरणों के नियमों से बांधा गया। तभी अपभ्रंश भाषा भी भ्रष्ट होने लगी और

एक–एक प्रादेशिक भाषा कई भाषाओं में विभक्त हो गई। **शौरसेनी अपभ्रंश से गुजराती, राजस्थानी, ब्रज, बुन्देली, मालवी** आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ। **मागधी अपभ्रंश से वज्जिका, बंग्ला, उडिया, असमिया, मगही, पाली, मैथिली, भोजपुरी, नेपाली, अंगिका** आदि पूर्वोत्तर की आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ। **अर्धमागधी अपभ्रंश से अवधी, बघेली, छत्तीसगढी** आदि पूर्वी प्रदेश की आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ। **महाराष्ट्री अपभ्रंश से मराठी, कोंकणी** आधुनिक भाषा का विकास हुआ। पैशाची अपभ्रंश से **पंजाबी, डोंगरी** आदि उत्तर की आधुनिक भाषाओं का विकास हुआ। सिन्ध के ब्राचड प्रदेश में बोली जाने वाली **ब्राचड अपभ्रंश से सिन्धी भाषा** का विकास हुआ।[7]

इसीप्रकार अपभ्रंश के भेदों की दृष्टि से मार्कण्डेय ने **प्राकृतसर्वस्व** में सूक्ष्म भेद व्यवस्थित प्रकरण के अन्तर्गत अपभ्रंश के 27 भेदों का नामोल्लेख किया है, उनसे अपभ्रंश के भेदों के सम्बन्ध में संकेत मिलता है। **1. ब्राचड 2. लाट 3. वैदर्भ 4. उपनागर 5. नागर 6. वर्वर 7. आवन्त्य 8. पंचाल 9. टक्क 10. मालव 11. कैकय 12. गौड़ 13. औड्र 14. हैव 15. पाश्चात्य 16. पाण्डय 17. कुन्तल .18. सेंहली 19. कलिंग 20. प्राच्य 21. कार्णाट 22. कांच्य 23. द्रविड 24. गौर्जर 25. आभीर 26. मध्यदेशीय 27. वैताल।**

इन 27 नामों का उल्लेख करने के बाद भी मार्कण्डेय को संतोष नहीं हुआ। उन्होंने आगे कहा कि विभाषा के भेदों की दृष्टि से तो अपभ्रंश के हजारों भेद किए जा सकते हैं। इन विभिन्न अपभ्रंशों से ही आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का उद्भव हुआ है।[8]

इसप्रकार देश के दक्षिण भारत की द्रविड भाषाओं के अतिरिक्त जो भी भाषाएँ अपभ्रंश से निरूसृत हुई हैं, उन सभी भाषाओं में प्राकृत का प्रभाव निश्चित रूप से है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश– मध्ययुग में ईसा की दूसरी से छठी शताब्दी तक प्राकृत भाषा का साहित्य में कई रूपों में प्रयोग हुआ। व्याकरणों में प्राकृत भाषा के नियम के द्वारा एकरूपता लाने का प्रयत्न किया, किन्तु प्राकृत में एकरूपता नहीं आ सकी, इसके बाद कई लोकभाषाओं का जन्म हुआ। जो पूर्व में प्राकृत का परिवर्तित रूप अपभ्रंश कहलाता था।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं का क्षेत्र प्रायः एक रहा है तथा विशेष प्रकार का साहित्य इसमें लिखा गया। विकास की दृष्टि से भी इनमें घनिष्ठ सम्बन्ध है, अपभ्रंश जन सामान्य की भाषा का पूर्णतया प्रतिनिधित्व करती है। विभक्ति, प्रत्यय, उपसर्गों में भी प्राकृत और अपभ्रंश में स्पष्ट अन्तर है, अपभ्रंश में देशी रूपों की बहुलता है, यह उकार बहुला भाषा है।

अपभ्रंश को आभीरी, भाषा, देशी एवं अवहट्ट आदि नाम से भी जाना जाता है, ये विभिन्न नाम अपभ्रंश के विकास को सूचित करते हैं। पश्चिमी भारत की बोली विशेष को

---

7 जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह (अपभ्रंश जैनग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह), द्वितीय भाग, पृष्ठ 14।

8 प्राकृत सर्वस्व, मार्कण्डेय, श्लोक–2 वृत्ति, पृष्ठ–5।

आभीरी अपभ्रंश कहा गया है। जनभाषा की बोली होने से इसे भाषा कहा है। कथ्य भाषा होने से यह देशी कही गयी है तथा परवर्ती अपभ्रंश के लिये अवहट्ट कहा गया है, जो अपभ्रंश और हिन्दी भाषा को परस्पर जोड़ने वाली कही है। वह आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के पूर्ववर्ती अवस्था में प्राकृत में कृत्रिमता आ जाने से तथा साहित्य के सीमित होने से अपभ्रंश भाषा उदय में आयी। जब अपभ्रंश का साहित्य में सर्वाधिक प्रयोग होने लगा, तो आगे चलकर लोक में अन्य क्षेत्रीय भाषाएँ पनपने लगी। आधुनिक आर्य भाषाओं ने प्राकृत संस्कृत के गुणों को अपनाकर अपभ्रंश के प्रभाव को आधुनिक रूप से स्पष्ट और सरल बनाया। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश इन तीनों की विशेषताएँ एकत्र हुई, किन्तु लोकभाषा होने के कारण प्राकृत और अपभ्रंश का दाय उनके विकास में अधिक है।

आधुनिक भाषाएँ– प्राकृत ने आधुनिक भारतीय भाषाओं को कई तरह से प्रभावित किया। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है, अतः उसे इतना सरल होना चाहिये कि कहने एवं सुनने वालों के बीच विचारों का सम्प्रेषण बना रहे। एक दूसरे के अन्तरंग को वे समझ सके, प्राकृत ने इसी सरलीकरण को स्वयं अपनाया तथा दाय के रूप में क्षेत्रीय भाषाओं को यह विरासत सौंपी। भाषा का सरलीकरण उन शब्दों को ग्रहण करने से आता है, जो जन सामान्य के बीच अभिव्यक्ति के माध्यम होते हैं। प्राकृत ने ऐसे ही देशी शब्दों को प्राथमिकता दी। हेमचन्द्र की देशी नाममाला इस प्रकार के शब्दों का भण्डार है। आधुनिक आर्य भाषाओं में भी ऐसे अनेक शब्द आज प्रयुक्त होते हैं। जो प्राकृत अपभ्रंश की यात्रा करते हुये यहाँ तक पहुँचे हैं, किन्तु लोक शब्दों से ही किसी भाषा का काम नहीं चलता। उसे शिष्ट भाषा के शब्द एवं प्रवृत्तियों को भी अपनाना पड़ता है। यही कारण है कि प्राकृत में तत्सम और तद्भव शब्दों का भी समावेश हैं। भारतीय भाषाओं के इतिहास से यह भलीभांति ज्ञात होता है कि कभी लोकभाषाओं ने देशी शब्दों को साहित्य के सिंहासन पर बैठाया तो किसी परिष्कृत शब्दों को भी लोक मानस के अनुकूल गढ़ा है। ध्वनि विकास के द्वारा ऐसे शब्द किसी भी भाषा में प्रयुक्त होते रहते हैं।

शौरसेनी प्राकृत की आधुनिक भाषाएँ – भारत के शूरसेन प्रदेश में बोली जाने वाली प्राकृत को शौरसेनी प्राकृत के नाम से जाना जाता है। पूर्व काल से वर्तमान तक शूरसेन प्रदेश मथुरा के अन्तर्गत आता था। जो वर्तमान में शौरीपुर के नाम से जाना जाता है। इस शौरसेनी प्राकृत से ब्रज, कन्नौजी, गुजराती, राजस्थानी, बुन्देली, अवन्तिका आदि आधुनिक भाषाएँ विकसित हुई है।

ब्रज भाषा – शूरसेन प्रदेश का सबसे निकटवर्ती क्षेत्र ब्रज है। यहाँ की भाषा को ब्रज भाषा कहा जाता है। यह भाषा शौरसेनी प्राकृत की अपभ्रंश से विकसित हुई है। इसका विकास मुख्यतः पश्चिमी उत्तरप्रदेश और उससे लगते राजस्थान, मध्यप्रदेश व हरियाणा में हुआ। मथुरा, अलीगढ़, हाथरस, आगरा, मैनपुरी, एटा, भरतपुर, हिण्डौनसिटी, धौलपुर, ग्वालियर,

मुरैना, पलवल आदि इलाकों में आज भी यह मुख्य संवाद की भाषा है। इस एक पूरे इलाके में ब्रजभाषा या तो मूल रूप में या हल्के से परिवर्तन के साथ विद्यमान है। इसीलिये इस इलाके के एक बड़े भाग को बृजांचल या बृजभूमि भी कहा जाता है।

भारतीय आर्यभाषाओं की परम्परा में विकसित होने वाली ब्रजभाषा शौरसेनी अपभ्रंश की कोख से जन्मी है। जब से गोकुल वल्लभ संप्रदाय का केन्द्र बना, ब्रजभाषा में कृष्ण विषयक साहित्य लिखा जाने लगा। इसी के प्रभाव से ब्रज की बोली साहित्यिक भाषा बन गई। भक्तिकाल के प्रसिद्ध महाकवि महात्मा सूरदास से लेकर आधुनिक काल के विख्यात कवि श्री वियोगी हरि तक ब्रजभाषा में प्रबन्ध काव्य तथा मुक्तक काव्य समय-समय पर रचे जाते रहे।

ब्रजभाषा आज भी भरतपुर, आगरा, धौलपुर, हिण्डौनसिटी, मथुरा, अलीगढ़, हाथरस, मैनपुरी, एटा और मुरैना जिलों में बोली जाती है। इसे हम केन्द्रीय ब्रजभाषा के नाम से भी पुकार सकते हैं। केन्द्रीय ब्रजभाषा क्षेत्र के उत्तर पश्चिम की ओर बुलंदशहर जिले की उत्तरी पट्टी से इसमें खड़ी बोली की झलक आने लगती है। उत्तरी-पूर्वी जिलों अर्थात् बदायूँ और एटा जिलो मे इस पर कन्नौजी का प्रभाव प्रारंभ हो जाता है। दक्षिण की ओर ग्वालियर में पहुँचकर इसमें बुंदेली की झलक आने लगती है। पश्चिम की ओर गुड़गाँव तथा भरतपुर का क्षेत्र राजस्थानी से प्रभावित है।

ब्रज	प्राकृत	अर्थ
अंखिया	अक्खि	आँख
अंगिरा	अंगिरा	अंगडाई
मइया	मइया	माता
बो	सो	वह
काह	किं	क्या
लल्ली	लल्ली	लड़की
चोट्टा	चोट्टा	चोर

ब्रज भाषा के विकास में अपभ्रंश का योगदान– ब्रज भाषा के विकास को निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है।

1. भाषिक संरचना का आधार–ब्रज भाषा की ध्वनियाँ, शब्द–विन्यास और व्याकरण काफी हद तक अपभ्रंश से आए हैं। जैसे संस्कृत के गच्छति → प्राकृत गच्छइ → अपभ्रंश जइ → ब्रज में जायो/जाय हुआ। कई क्रिया रूप, सर्वनाम और विभक्ति रूप ब्रज में अपभ्रंश से ही विकसित हुए हैं।

मुरैना, पलवल आदि इलाकों में आज भी यह मुख्य संवाद की भाषा है। इस एक पूरे इलाके में ब्रजभाषा या तो मूल रूप में या हल्के से परिवर्तन के साथ विद्यमान है। इसीलिये इस इलाके के एक बड़े भाग को बृजांचल या बृजभूमि भी कहा जाता है।

भारतीय आर्यभाषाओं की परम्परा में विकसित होने वाली ब्रजभाषा शौरसेनी अपभ्रंश की कोख से जन्मी है। जब से गोकुल वल्लभ संप्रदाय का केन्द्र बना, ब्रजभाषा में कृष्ण विषयक साहित्य लिखा जाने लगा। इसी के प्रभाव से ब्रज की बोली साहित्यिक भाषा बन गई। भक्तिकाल के प्रसिद्ध महाकवि महात्मा सूरदास से लेकर आधुनिक काल के विख्यात कवि श्री वियोगी हरि तक ब्रजभाषा में प्रबन्ध काव्य तथा मुक्तक काव्य समय–समय पर रचे जाते रहे।

ब्रजभाषा आज भी भरतपुर, आगरा, धौलपुर, हिण्डौनसिटी, मथुरा, अलीगढ़, हाथरस, मैनपुरी, एटा और मुरैना जिलों में बोली जाती है। इसे हम केन्द्रीय ब्रजभाषा के नाम से भी पुकार सकते हैं। केन्द्रीय ब्रजभाषा क्षेत्र के उत्तर पश्चिम की ओर बुलंदशहर जिले की उत्तरी पट्टी से इसमें खड़ी बोली की झलक आने लगती है। उत्तरी–पूर्वी जिलों अर्थात् बदायूँ और एटा जिलों में इस पर कन्नौजी का प्रभाव प्रारंभ हो जाता है। दक्षिण की ओर ग्वालियर में पहुँचकर इसमें बुंदेली की झलक आने लगती है। पश्चिम की ओर गुड़गाँव तथा भरतपुर का क्षेत्र राजस्थानी से प्रभावित है।

ब्रज	प्राकृत	अर्थ
अंखिया	अक्खि	आँख
अंगिरा	अंगिरा	अंगडाई
मइया	मइया	माता
बो	सो	वह
काह	किं	क्या
लल्ली	लल्ली	लड़की
चोट्टा	चोट्टा	चोर

ब्रज भाषा के विकास में अपभ्रंश का योगदान– ब्रज भाषा के विकास को निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता है।

1. भाषिक संरचना का आधार–ब्रज भाषा की ध्वनियाँ, शब्द–विन्यास और व्याकरण काफी हद तक अपभ्रंश से आए हैं। जैसे संस्कृत के गच्छति → प्राकृत गच्छइ → अपभ्रंश जइ → ब्रज में जायो/जाय हुआ। कई क्रिया रूप, सर्वनाम और विभक्ति रूप ब्रज में अपभ्रंश से ही विकसित हुए हैं।

2. शब्दावली – ब्रज भाषा की अधिकांश शब्दावली अपभ्रंश से उत्पन्न हुई है।

उदाहरण – संस्कृत कृष्णः → प्राकृत कण्ह → अपभ्रंश कन्ह → ब्रज में कान्हा

संस्कृत स्मरण → अपभ्रंश सरण → ब्रज में सरन या स्मरन

3. साहित्यिक परंपरा की नींव – अपभ्रंश में भक्ति, वीर, और प्रेम से संबंधित अनेक रचनाएं हुईं, जो बाद में ब्रज भाषा में रचित भक्ति साहित्य का आधार बनीं। प्रसिद्ध अपभ्रंश कवि सरहपा, पुण्डरीक, धनपाल आदि ने जिस शैली और भावों में काव्य रचा, वही शैली ब्रजभाषा के सूरदास, राधा–कृष्ण के कवियों में परिलक्षित होती है।

4. काव्य परंपरा और शैली– छंद, अलंकार, और रस की जो परंपरा अपभ्रंश में विकसित हुई, वही ब्रज भाषा के साहित्य में विकसित होकर चरम पर पहुँची। अपभ्रंश के दोहा चउप्पअ सवैया जैसी विधाएँ ब्रज भाषा में निखरी।

5. लोक जीवन और अभिव्यक्ति – अपभ्रंश ने लोक जीवन से जुड़े भावों, संवेदनाओं, और प्रकृति चित्रण को भाषा में स्थान दिया। यही प्रवृत्ति आगे ब्रज भाषा में बनी रही, जिससे वह जनमानस की भाषा बन गई।

उदाहरणात्मक तुलना–

संस्कृत	प्राकृत	अपभ्रंश	ब्रज भाषा
जनः	जणो	जणउ	जनो / जन
भवति	होइ	होइ	होय / होई
कण्ठः	कंठो	कन्ड्ड	कंड्ड / कंठ
गच्छति	गच्छइ	जइ	जाय / जइ

निष्कर्ष –

ब्रज भाषा का स्वरूप, शैली, शब्द–संपदा, और काव्य परंपरा अपभ्रंश भाषा के गहन प्रभाव से निर्मित हुई है। वास्तव में, अपभ्रंश ब्रज भाषा की जननी है। अपभ्रंश ने ब्रज को भाषिक गद्य–पद्य की दृष्टि से सक्षम, साहित्यिक रूप से परिपक्व, और भावात्मक रूप से समृद्ध बनाया। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि ब्रज भाषा का विकास अपभ्रंश के बिना अधूरा है।

2. नाट्यशास्त्र, भरतमुनि, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, हिमाचलप्रदेश।
3. दशरूपक– टीकाकार– धनिक(प्राकृतभाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ–12)
4. गउडवहो– वाक्पतिराज, प्राकृत टेक्ट सोसायटी, अहमदाबाद, गुजरात।
5. काव्यालंकार– रुद्रट, (प्राकृतभाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, पृष्ठ–14)
6. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, तारा बुक एजेन्सी, वाराणसी।
7. जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह (अपभ्रंश जैनग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह), द्वितीय भाग, सं.– पं. परमानन्द जैन, शास्त्री, वीरसेवा मंदिर, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण– 1963
8. प्राकृत सर्वस्व, मार्कण्डेय, सं.– डॉ. ए.एन. उपाध्ये, प्राकृत टेक्स सोसायटी, अहमदाबाद, गुजरात।

A–81, त्रिवेणी नगर,
गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर, राजस्थान
मो. 9716763305